Name of Paper : AMAR UJALA

Published at : NEW DELHI

Dated : 25 JUN 2007

Dy

एंटी ड्रग डे

ड्रग्स की गिरफ्त में भारतीय

चिंता

म्यांमार से भारी मात्रा में आता है नशीला पदार्थ

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भारत में रईसों की पार्टियों में एक्सटेसी जैसे नशीले पदार्थों के बढ़ते इस्तेमाल पर भारी चिंता जताई है। उनका कहना है कि भारतीय समाज के लिए ऐसे ड्रग चिंता का सबब बनते जा रहे हैं।

यूएन ऑफिस फॉर ड्रग्स एंड क्राइम (यूएनओडीसी) में परियोजना समन्वयक के पद पर काम कर रहे राजीव वालिया ने तस्करी और नशाखोरी के खिलाफ 26 जून को अंतरराष्ट्रीय ड्रग दिवस से पहले एक साक्षात्कार में कहा कि भारत में एक्सटेसी जैसे सिंथेटिक ड्रग की बढ़ती स्वीकार्यता चिंता का सबब है। हमें इस समस्या को लेकर अधिक से अधिक सावधान होना होगा। भले ही आज यह समस्या बेलगाम नहीं है, लेकिन यह भारत के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन सकती है। उन्होंने कहा कि फिलहाल यह एक खतरा तो है, लेकिन यह समस्या इस हद तक खतरनाक स्तर पर नहीं पहुंची है, जैसा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों यूरोप और अमेरिका में है। एफेड्रिन, एम्फेटेमाइन्स और मेथाक्वुलोन जैसे सिंथेटिक ड्रग को एक्सटेसी, एमडीएमए, एक्स, एक्सटीसी आदि नाम से भी जाना जाता है। संपन्न लोगों की पार्टियों में इन मादक द्रव्यों का धड़ल्ले से इस्तेमाल होता है। वालिया के मुताबिक ये ड्रग उत्तेजक और विभ्रमक प्रभावों वाली कई नशीली दवाओं के मिश्रण होते हैं जो दिमाग और दूसरे अंगों पर बुरा असर डालते हैं। इन नशीली दवाओं से कई अंग प्रणालियों पर बेहद घातक असर पड़ता है। इनके इस्तेमाल से शरीर का तापमान बढ़ जाता है जिससे किडनी, दिल आदि की बीमारी पैदा होती है। कई बार अचानक मांसपेशियां भी काम करना बंद कर देती हैं। यह पूछे जाने पर कि भारत में इन नशीले पदार्थों का सबसे बड़ा स्रोत क्या है, तो उन्होंने बताया कि ऐसे अधिकांश पदार्थ म्यांमार से भारत में आते हैं। वालिया के मुताबिक पिछले कुछ वर्षों में ऐसे पदार्थों की बरामदगी की घटनाओं में बढ़ोतरी बढ़ती समस्या का सूचक है।

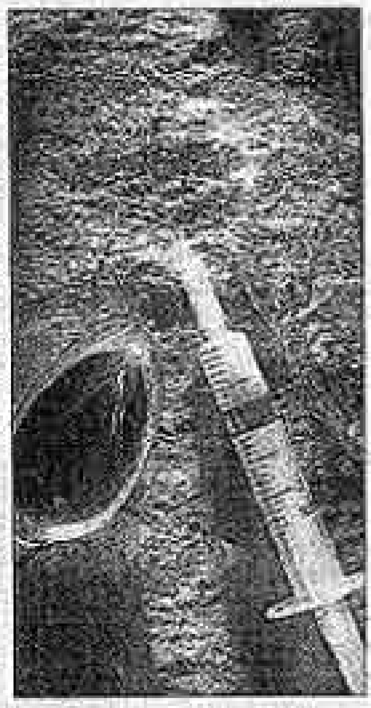

कैसे जाने की बच्चा नशे की गिरफ्त में है

कहा जाता है कि सावधानी ही सुरक्षा का सबसे बेहतर उपाय है। खासकर ऐसे मामले में जो आपके बच्चे की जिंदगी और उसके भविष्य से जुड़ा हो तो माता-पिता को बच्चे के व्यवहार और उसकी गतिविधियों पर बारीकी से नजर रखनी चाहिए। बचपन या किशोरावस्था में यदि व्यवहार असामान्य नजर आए- मसलन चिड़चिड़ापन, आवेश में आना और हिंसा पर उतारू हो जाने जैसी हरकतें बढ़ रही हों तो माता-पिता को सतर्क हो जाना चाहिए।

लक्षण

- अवसाद में डूबे रहना
- ख्यालों में खोए रहना
- अचानक पहनावे में तब्दीली
- कमरे में डियोड्रेंट का इस्तेमाल
- देर रात तक घर से बाहर रहना
- गतिविधियों में लिप्त
- होमवर्क में दिलचस्पी नहीं लेना
- पेपर के टुकड़ों को मोड़ना
- बार बार उधार मांगने की आदत
- शयनकक्ष में बोतलें मिलना
- बच्चों के बिस्तर सिरहाने दवाओं की गोलियां पाया जाना

नशीले पदार्थ

- मारिजुआना
- अल्कोहल
- कोकीन
- हेरोइन
- एक्सटेसी
- अफीम
- चरस
- गांजा
- स्मैक

ऐसे बचाएं लाडलों को

बच्चे और किशोर अगर नशीली दवाओं की चपेट में आ जाएं तो उनके साथ पूरे परिवार का जीना दुश्वार हो जाता है। अच्छा तो यह है कि अच्छे संस्कार देकर और जागरूक बनाकर बच्चों को इसकी गिरफ्त में आने से बचा लें। लेकिन दुर्भाग्य से अगर यह खतरा खड़ा हो गया है तो विशेषज्ञों की राय लेने और इसके निदान में लापरवाही न बरतें।

हरकतों पर नजर रखें

- बच्चों के साथ पर्याप्त वक्त बिताएं
- स्कूल की गतिविधियों में शामिल हों
- नशे से दूर रहकर खुद मिसाल बनें
- बच्चों के दोस्तों और परिवार के प्रति सजग रहें
- पढ़ने में दिलचस्पी पैदा करें
- बच्चों को तनाव और विपरीत परिस्थितियों से निपटना सिखाएं
- समस्याओं के समाधान में इन्हें सक्षम बनाएं
- नशीली दवाओं के खिलाफ अभियान में सहयोग दें
- नशे के दुष्प्रभाव और हिंसा से नुकसान पर चर्चा करें

विरोध

इंडोनेशिया के सुलवेसी में इंटरनेशनल एंटी ड्रग डे के मौके पर मास्क लगाकर प्रदर्शन करते लोग। रायटर